ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-11* February-2021
Anthology : The Research

इक्कीसवीं सदी में हिंदी संस्मरणात्मक साहित्य का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, वर्गीकरण, विकास एवं अन्य विधाओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन''

Study of The Meaning, Definition, Form, Classification and Development of Memoirs in Hindi Literature in the Twenty-First Century and Comparison with Other Genres

Paper Submission: 15/02/2021, Date of Acceptance: 26/02/2021, Date of Publication: 27/02/2021

गजानन्द मीणा
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
राजकीय कला महाविद्यालय,
कोटा, राजस्थान, भारत

सारांश

स्मृति केआधार पर किसी विषय पर अथवा किसी व्यक्ति पर लिखित आलेख को संस्मरण कहलाता है। संस्मरण विधा मनुष्य के लिए एक उत्सुकता का विषय है। संस्मरण विधा में शोध कार्य करते समय न जाने कितने लोगों के चरित्रों से हमें जीवन जीने की प्रेरणा मिल गयी। किसी घटना या व्यक्ति से सम्बन्धित अनुभूति जब लेखक के हृदय पटल पर आकर मन के भीतर ही भीतर कुरेदती है तब वह अनुभूति अभिव्यक्ति के रूप में साकार हो संस्मरण बन जाती है। संस्मरण लेखक के निजी जीवन की घटनाओं पर आधारित होता है। यह लेखक का अपना अनुभव होते होते हुए भी दूसरे के जीवन को उद्घाटित करता है जिससे तत्कालीन परिस्थिति का बोध होता है। संस्मरण में लेखक अपने जीवन के अतीत में पहुँचकर अपने स्मृतिकोश में सुरक्षित व्यक्ति, वस्तु, दृश्य या घटना का वर्णन इस ढंग से करता है कि वर्ण्य–वस्तु सजीव रूप में पाठक के सम्मुख उपस्थित हो जाती है। स्मृति के आधार पर हें स्मरणीय व्यक्ति के आत्मीय सम्बन्ध से जोड़ती है। संस्मरण साहित्य एक स्वतंत्र विधा के रूप में विकसित हुआ है। सदैव यह पाठकों के लिए प्रेरणादायक है।

On the basis of memory, an article or treatise written in relation to which subject or device is called a memoir. Memoir literature is a matter of curiosity for humans. While doing research work in memoir literature, we do not know how many people got the inspiration to live life through their character when an event or a person has a related feeling. He come to the heart and crushes it inside the mind. She then becomes a memoir by realizing as acognition accused. Memoirs based on the personal life events of the author it reveals the life of another despite the experience of the writer. In which theme is a sence of the then circumstances. In the memoir, the author reaches into the past of his life and describes a safe person object. Scene or events his memory book in such a way that the narration object becomes presents in front of the reader as a living being. The basis memory caonnects us to the intimate relationship with the appointment of a person of remembrance.

Memoir literature has developed as an independent genre. It is inspiring for the readers.

मुख्य शब्द : हिन्दी साहित्य, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, परिभाषा स्वरूप, वर्गीकरण, विकास।

Hindi Literature, Memoirs, Sketches, Biography, Autobiography, Definition, Classification, Development.

प्रस्तावना

साहित्य की दुनिया का अपना पदानुक्रम है। इस पदानुक्रम में कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, आलोचना, निबंध आदि को साहित्य की प्रमुख विधाएँ माना जाता है और जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रा–वृतांत, रिपोर्ताज आदि को फुटकर या अन्य गद्य विधाओं की श्रेणी में डाल दिया जाता

हैं डॉ. नगेन्द्र द्वारा संपादित 'हिंदी साहित्य का इतिहास' से लेकर डॉ. रामचंद्र तिवारी के 'हिंदी का गद्य साहित्य' और दूसरी प्रमुख पुस्तकों तक इन विधाओं को हाशिये का साहित्य समझने की प्रवृत्ति साफ–साफ दिखाई देती हैं लेकिन समय के साथ–साथ फुटकर कोटे में रखी जाने वाली ये विधाएँ साहित्य के केन्द्रस्थल की ओर बढ़ रही है और वर्तमान समय में इनका महत्त साहित्य की परंपरागत केन्द्रीय विधाओं से कतई कम नहीं माना जाता है। विगत कुछ वर्षों में इनमें से कुछ गद्य विधाओं ने अपने लिए हिंदी–साहित्य में खास मुकाम बनाया है और इनकी चर्चा कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक से कम नहीं हो रही है।

हाशिये से उठकर केन्द्र में आने वाला ऐसा ही एक विधा रूप है संस्मरण का। बीसवीं सदी की शुरुआत में हिंदी–साहित्य में प्रकट होने वाली यह आधुनिक विधा पश्चिम की देन है। बीसवीं सदी को भारतीय जीवन में बदलाव की सदी कहा जा सकता है। इस सदी में समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था, संस्कृति, साहित्य – हर क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन और अभिनव प्रयोग दिखाई देते हैं। इस अभिनव प्रयोगशीलता और बदलाव की प्रेरणा ने साहित्य के क्षेत्र में भी नयी विधाओं के जन्म और विकास में अपनी भूमिका निभाई। पश्चिमी साहित्य के प्रभाव से इस सदी के आरंभ से ही नयी विधाओं का जन्म हुआ, जिनमें संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, जीवनी, आत्मकथा तथा यात्रा–साहित्य प्रमुख है। इसमें दोराय नहीं कि ये विधाएँ यूरोपीय साहित्य की देन हैं। इन विधाओं का सूत्र प्राचीन साहित्य में खोजना एक दुराग्रह मात्र कहा जा सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य

संस्मरण लिखते समय लेखक का उद्देश्य होता है अपने भोगे हुए पलों को अच्छी स्मृतियों को समाज तक पहुँचाना। कहने के लिए तो यादें स्मृतियों से तो जुड़कर पन्नों पर उतर जाती है। संस्मरण लेखक हमेशा अपने अंदर और बाह्य दोनों संबंधों को अपनी रचना में से स्थान देता है उसका उद्देश्य हमेशा अपने अनुभवों का विस्तार देना होता है जिसके माध्यम से वह औरों को यह बता सके कि जिन पलों को उसने भोगा है, उसमें जिये गये रिश्तों में क्या–क्या खूबियाँ हैं और क्या–क्या कमियाँ। पाठक इन्हें पढ़कर अपने जीवन में अच्छी बातें ग्रहण कर सके और बुरे से बच सके। संस्मरण लिखने के मूल उद्देश्य में यह कारण विद्यमान होता है कि समाज की कोई भी बात अच्छी या बुरी प्रत्यक्ष या परोक्ष जब हमें अपनी प्रक्रियाओं के लिए प्रोत्साहित करती है। तब यह संस्मरण का पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से पुस्तक के माध्यम से, भेंटकर्त्ताओं के माध्यम से अध्यायों के रूप में छप कर समाज में जनवर्ग का परिष्कार करता है।

परिभाषा

संस्मरण अंगरेजी के 'मेमायर्स' शब्द का हिंदी अनुवाद है, जिसका अर्थ है –स्मरण के आधार पर लिखा गया साहित्य रूप। संस्मरण शब्द की व्युत्पत्ति सम् + स्मृ + ल्युट (अण्) से हुई है, जिसका अर्थ होता है – सम्यक् तरीके से अर्थात् भली–भाँति किया गया स्मरण। सम्यक् स्मृति। यानी सहज आत्मीयता तथा गंभीरतापूर्वक किसी व्यक्ति, घटना, दृश्य, वस्तु आदि का पूर्णरूपेण स्मरण करना। स्पष्ट है कि इस विधा का मूल आधार स्मरण या स्मृति है। हिंदी साहित्यकोश के अनुसार, ''स्मृति के आधार पर किसी विषय या व्यक्ति के संबंध में लिखित लेख या ग्रंथ को संस्मरण कह सकते हैं।''

स्मृति की इस महत्ता को स्वीकार करते हुए डॉ. नगेन्द्र ने संस्मरण को 'वैयक्तिक अनुभव तथा स्मृति से रचा गया इतिवृत्त अथवा वर्णन' कहा है।' ''साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में कार्य करने वाले विख्यात व्यक्ति स्वभावतः जब किसी अन्य महापुरूष अथवा विशिष्टता संपन्न सामान्य पुरूष के संबंध में चर्चा करते हैं, अथवा स्वयं के जीवन के किसी अंश को प्रकाश में लाने का प्रयत्न करते हैं, तब संस्मरण का जन्म होता है। ये संस्मरण अतीत को सजीव करते हैं।''१

संस्मरण में संस्मरणकार की स्मृति के आधार पर किसी व्यक्ति या विषय का उसके विशेष काल खंड की परिसीमा में वर्णन होता है। इस आधार पर इसमें इतिहास का भी गुण आ जाता है। लेकिन संस्मरण इतिहास के निकट होते हुए भी इतिहास नहीं है। यह इतिहास का स्त्रोत है। इतिहास या इतिहास प्रसिद्ध के जीवन के किसी अंश या पक्ष की साहित्यिक अभिव्यक्ति है। हिंदी साहित्य कोश के अनुसार – ''इसमें लेखक अपने समय के इतिहास को लिखना चाहता है, परंतु इतिहासकार के वस्तुपरक रूप से वह बिल्कुल अलग है। संस्मरण लेखक जो स्वयं देखता है, जिसका स्वयं अनुभव करता है, उसी का वर्णन करता है। उसके वर्णन में उसकी अपनी अनुभूतियाँ, संवेदनाएँ डूबी रहती हैं।'' इस प्रकार हम देखते हैं कि इसमें व्यक्तिपरकता यानी सब्जेक्टिविटी ज्यादा होती है। लेखक, वही लिखना चाहता है, जो वह देखता है। किसी चीज को समग्रता में देखना, उसका पूर्ण चित्र खींचना उसका उद्देश्य नहीं होता है, न ही उससे ऐसी माँग की जाती है।

दूसरे शब्दों में, जब लेखक सहज आत्मीयता तथा गंभीरता से अपने या किसी अन्य व्यक्ति के जीवन में बीती किसी घटना अथवा दृश्य का स्मरण करता है, तो उसे संस्मरण कहते हैं। संस्मरण में अक्सर उन पक्षों के बारे में लिखा जाता है, जिनका जिक्र इतिहास के प्रचलित महावृत्तांत में नहीं होता है। इतिहास व्यक्ति को उसकी सफलताओं और असफलताओं के आईने में देखता है। उसके कार्यों को युग की कसौटियों पर कसता है, जबकि संस्मरण व्यक्ति को उसके समय में स्थित करते हुए भी उसके व्यक्तित्व के पहलुओं पर ज्यादा जोर देता है। उसके जीवन की वे छोटी–मोटी कथाएँ कहता हैं, जिन्हें इतिहास छोड़ देता है। संस्मरण में किसी घटना का जिक्र सिर्फ इतिहास की प्रवाह में स्थित एक बिंदु के तौर पर नहीं होता है, बल्कि इसमें उस घटना का आँखों–देखा हाल सुनाया जाता है। इस तरह संस्मरण अतीत का आँखों देखा हाल है, जिसे प्रामाणिकता देने के लिए ग्रंथों या संदर्भों का सहारा नहीं लिया जाता। बल्कि संस्मरण लिखने वाला ही उसकी प्रामाणिकता के लिए जिम्मेवार होता है। इसलिए इस पर पूरी तरह भरोसा भी नहीं किया जा सकता है। '..... संस्मरण को संदेह से देखा जाना चाहिए, उसे संदेह से परे मानने की भूल कतई नहीं करनी चाहिए।२

संस्मरण की एक और महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यह मूल रूप से किसी प्रसिद्ध व्यक्ति या अपने क्षेत्र में प्रतिष्ठा अर्जित करने वाले व्यक्ति द्वारा अपने समकालीन किसी प्रसिद्ध व्यक्ति पर लिखा जाता है। इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका के अनुसार 'मेमायर्स' (संस्मरण) का रचनाकार ऐसा युग–पुरुष ही हो सकता है, जिसने दो के इतिहास के निर्माण में प्रमुख भूमिका अदा की हो या जिसे इतिहास–निर्माण को निकट से देखने का अवसर प्राप्त हुआ हो।' संस्मरण लेखक अपने निजी अनुभव को विशिष्ट व्यक्तियों, वस्तुओं अथवा क्रियाकलापों के चित्रण के माध्यम से व्यक्त करता है। उसके वर्णन में अपनी अनुभूतियाँ, संवेदनाएँ भी रहती हैं। इस दृष्टि से शैली में वह निबंधकार के समीप है। संस्मरण लेखक यदि अपनी बारे में लिखता है, तो उसकी रचना 'आत्मकथा' के निकट होगी, यदि अन्य व्यक्तियों के विषय में लिखे, तो 'जीवनी' के निकट। इन दो प्रकार के संस्मरणों को अंगरेजी में क्रमशः 'मेमायर्स' / डमउवपते तथा 'रैमिनिसेंसिज' / त्मउपदपेबमदबम कहते हैं। सबसे बड़ी बात है कि संस्मरण में लेखक किसी विषय या व्यक्ति के जीवन के किसी अंश की प्रभावमयी अभिव्यक्ति स्मृति के आधार पर करता है। हिंदी का संस्मरण अंग्रेजी के 'मेमायर' तथा 'रैमिनिसेंसिज' दोनों को आत्मसात किये हुए हैं। यह कई बार आत्मकथा के भी निकट लगता है, तो कई बार जीवनी के भी। इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका में 'मेमायर' (संस्मरण) को 'ऑटोबायोग्राफी (आत्मकथा) का प्रारंभिक रूप में माना गया हैं। इसके अनुसार ऑटोबायोग्राफी के ढंग की रचनाओं के लिए 18वीं सदी के पूर्व 'मेमोरिस' शब्द का प्रयोग किया जा रहा है।

डॉ. राजमणि शर्मा के अनुसार, 'हिंदी–साहित्य में ऑटोबायोग्राफी ओर 'मेमायर्स' दो भिन्न विधा के रूप में विकसित हुए हैं, जिन्हें क्रमशः 'आत्मकथा' तथा 'संस्मरण साहित्य' कहा जाता है। आत्मकथा में संस्मरण की आवश्यकता होती है, लेकिन उसे संस्मरण की संज्ञा देना युक्तिसंगत नहीं लगता। वस्तुतः, 'संस्मरण' 'मेमायर्स' का सही प्रतिनिधि है, पर आंशिक मात्र ही।३

वस्तुतः ज्यादा सही यह कहना होगा कि हिंदी का संस्मरण अंग्रेजी के मेमायर्स तथा रैमिनिसैंसिज, दोनों को अपने, में आत्मसात् किये हुए है। मेमायर्स आत्मकथा के निकट होता है, जबकि रैमिनिसेंसिज जीवनी के निकट।

संस्मरण की विशेषताएँ

1. संस्मरण वर्णन–प्रधान जीवनीपरक कथेतर गद्य–विधा है।
2. संस्मरण का आधार स्मृति है।
3. इनमें सजीव पात्रों के बाहरी रूप के साथ–साथ आंतरिक चरित्र का भी वर्णन रहता है।
4. ये कल्पना पर नहीं वास्तविकता पर आधारित होते हैं।
5. संस्मरण लेखक, संस्मरण में अपने निजी अनुभवों को अभिव्यक्ति प्रदान करने का लक्ष्य सामने रखता है और अभिव्यक्ति का माध्यम विशिष्ट व्यक्तियों, वस्तुओं तथा क्रियाकलापों को बनाता है।
6. प्रायः संस्मरण लेखक और स्मरण किया जा रहा व्यक्ति, दोनों प्रसिद्ध होते हैं।
7. संस्मरण में यथार्थ का चित्रण तो होता है, पर वह भावना के रंग में रंगा होता है। यह यथार्थ स्मृति आधारित होता है, इसलिए उसमें इतिहास की धार नहीं होती। न इतिहास की तरह तथ्यपरकता।
8. अपने वर्णन के माध्यम से संस्मरण, संस्मर्ण्य के जीवन के सर्वाधिक महत्वपूर्ण अथवा अब तक अज्ञात ऐसे तथ्य को प्रत्यक्ष करना चाहता है तो उसके परिवेश और प्रकृति को भी उजागर कर दें।
9. संवेदनात्मक चित्रण संस्मरण के लिए आवश्यक है। यह दो लोगों के बीच आत्मीय रिश्ते या अंतरंगता से पैदा होता है।

इस आधार पर हम संस्मरण को एक विधा के रूप में इन शब्दों में परिभाषित कर सकते हैं :

''संस्मरण जीवनीपरक कथेतर गद्य विधा है, जिसमें कोई लेखक किसी विशिष्ट व्यक्ति के जीवन से जुड़ी मार्मिक आत्मीय स्मृतियों को रोचक और तथ्यपरक ढंग से वर्णित करता है। इस वर्णन में लेखक की अंतरंगता की झलक भी दिखाई देती है।४

संस्मरण के तत्त्व

संस्मरण की ऊपर वर्णित परिभाषा के आधार पर संस्मरण के तत्त्व निर्धारित किये जा सकते हैं। हमने देखा है कि संस्मरण का आधार स्मृति है। यह स्मृति किसी व्यक्ति से संबंधित होती है, जिसके साथ लेखक की गहरी आत्मीयता या नजदीकी होती है। लेखक इस व्यक्तित्व के किसी पक्ष का या उसके साथ बिताये हुए क्षणों का अंकन पूरी आत्मीयता के साथ करता है। हालांकि वह अपने वर्णन में पूरी तरह से तटस्थ नहीं होता, लेकिन उसे तथ्यों से छेड़छाड़ की इजाजत नहीं होती।

इस आधार पर संस्मरण के चार प्रमुख तत्त्व माने जा सकते हैं –

स्मृति

अतीत की स्मृति संस्मरण का प्राथमिक तत्व है। संस्मरण का आधार ही स्मृति है। इस विधा में किसी व्यक्ति या स्थान से जुड़ी स्मृतियों को लेखक कागज पर उकेरता है। ये स्मृतियाँ विशिष्ट होती है। ऐसी स्मृतियाँ, जो किसी स्मृति में आ रहे व्यक्ति के चरित्र के विशिष्ट पहलू को बताती है, या लेखक के जीवन से जुड़ी होती है। इस मामले में यह स्मृतियों के जंजाल में से विशेष स्मृतियाँ चुनने का लेखकीय उपक्रम कहा जा सकता है।

व्यक्तित्व का चित्रण

संस्मरण प्रायः किसी व्यक्ति के बारे में लिखा जाता है। हालांकि संस्मरण जगहों और घटनाओं के बारे में लिखे गये हैं, लेकिन इन संस्मरणों का आधार भी मुख्यतः व्यक्तियों से जुड़ी स्मृतियाँ होती हैं क्योंकि बिना लोगों के स्थान और घटना का कोई महत्त्व नहीं होता। कोई जगह खुद को लोगों के माध्यम से ही साकार करता है, जिसके संपर्क में लेखक आता है। संस्मरण की विशेषता यह होती है कि यह किसी व्यक्ति के संपूर्ण जीवन को भले न दिखाता हो, लेकिन उसके व्यक्तित्व के किसी विशिष्ट पहलू को जरूर बताता है। इसी तरह से जब संस्मरणकार अपने संस्मरण के द्वारा किसी शहर को

जीवंत करता है। जैसे मनोहर श्याम जोशी ने 'लखनऊ मेरा लखनऊ' में किया है, तो यह काम भी लेखक लोगों के माध्यम से ही करता है।

आत्मीयता

आत्मीयता संस्मरण की अनिवार्य शर्त्त है। लेखक उसी व्यक्ति के बारे में लिखता है, जिसके साथ उसकी आत्मीयता हो। यह आत्मीयता संस्मरण से झलकनी भी चाहिए। अगर लेखक आत्मीय होकर और पूरी अंतरंगता के साथ किसी व्यक्ति के बारे में नहीं लिखेगा, तो संस्मरण शुष्कता का शिकार हो जायेगा। इसके द्वारा ही संस्मरण विधा विश्वसनीय और पठनीय हो पाती है।

तथ्यात्मकता

जब किसी व्यक्ति, घटना या स्थान के बारे में स्मृति के सहारे लिखा जाता है, तब यह जरूरी होता है कि जो भी लिखा जा रहा है, वह तथ्यपूर्ण हो। कुछ ऐसा न लिखा जाये, तो व्यक्ति को जानबूझकर गलत रौशनी में दिखाए। उसके बारे में गलत जानकारी दे। इसी तरह से किसी ऐतिहासिक घटना पर लिखते वक्त भी लिखे गये की ऐतिहासिक सत्यता का ध्यान दिया जाना चाहिए।

संस्मरण का वर्गीकरण

संस्मरण का वर्गीकरण करने की कई कोशिशें होती रही हैं। डॉ. मनोरमा शर्मा ने अपनी किताब 'संस्मरण और संस्मरणकार' में संस्मरणों को छह वर्गों में बाँटा है–

1. जीवनी प्रधान संस्मरण
2. यात्रा प्रधान संस्मरण
3. शिकार संबंधी संस्मरण
4. ऐतिहासिक संस्मरण
5. सामान्य संस्मरण
6. कलात्मक संस्मरण

इस विभाजन की अपनी समस्याएँ हैं। मसलन, जीवनी खुद एक प्रमुख विधा है और यात्रा वृत्तांत भी एक अलग और स्थापित विधा है। संस्मरण का ऐतिहासिक होना उसकी विशेषता है, क्योंकि यह अतीत को स्मृति के आधार पर दर्ज करता है।

शैली के आधार पर भी संस्मरण के भेद किये गये हैं। इसके मुताबिक संस्मरण के नौ भेद हैं –

1. आत्मकथात्मक संस्मरण
2. निबंधात्मक संस्मरण
3. डायरी शैली संस्मरण
4. पत्रात्मक शैली संस्मरण
5. तरंग शैली संस्मरण
6. वर्णनात्मक शैली संस्मरण
7. संवाद शैली संस्मरण
8. सूक्ती शैली संस्मरण
9. संबोधन शैली संस्मरण

इसके अलावा संस्मरण की चित्रात्मक शैली, व्यक्तित्व व्यंजक शैली, संगीत शैली, अलंकारिक शैली, स्वच्छंद शैली आदि कोटि भी बनायी जाती है।५

श्री शांतिप्रिय द्विवेदी जी की पुस्तक 'परिव्राजक की प्रजा', 'पांडेय बेचेन शर्मा' 'उग्र' की 'अपनी खबर' तथा किशोरीदास वाजपेयी आदि के संस्मरण आत्मकथात्मक संस्मरणों की श्रेणी में रखे जा सकते हैं। राहुल सांकृत्यायन के 'प्रवास के पत्र', प्रेमचंद और जैनेन्द्र जी के कुछ संस्मरण पत्रात्मक शैली में लिखी गये हैं। महादेवी वर्मा और रामवृक्ष बेनीपुरी को शैली को चित्रात्मक शैली कहा जा सकता है। हरिवंश राय बच्चन का काश्मीर यात्रा पर और गुलाब राय का कसौली यात्रा पर रोमांचकारी यात्रा संस्मरण उपलब्ध होता है।

लेकिन इस तरह का वर्गीकरण त्रुटिरहित नहीं है। डॉ. हरिमोहन लिखते हैं, :– ''कोई भी संस्मरण लेखक अपने लिखे संस्मरण में एक से अधिक शैलियों को अपना कर चल सकता है। या अपने व्यक्तित्व के अनुसार नयी शैली विकसित कर सकता है।'' ऐसे में कह सकते हैं कि शैली के आधार पर संस्मरण का वर्गीकरण करना एक तरह से बेमानी है।

डॉ. हरिमोहन संस्मरणों को दो वर्गों में रखने का आग्रह करते हैं –

1. चरित्र प्रधान संस्मरण
2. चरित्र प्रधान संस्मरण

चरित्र प्रधान संस्मरणों में लेखक घटनाओं की अपेक्षा संस्मर्ण्य के बाह्य, आंतरिक चरित्र को अधिक मुखरता के साथ उभरता है, जबकि घटना–प्रधान संस्मरणों में घटनाओं को चरित्र की अपेक्षा अधिक महत्व दिया जाता है।६

संस्मरण तथा अन्य विधाएँ

संस्मरण तथा रेखाचित्र

संस्मरण और रेखाचित्र में अंतर करना काफी मुश्किल है। दोनों की सीमा–रेखा काफी बारीक है और अक्सर इतनी मिली–जुली प्रतीत होती है कि हिंदी साहित्य में संस्मरणात्मक रेखाचित्र नाम की एक अलग विधा ही स्वीकार की जाती है। महादेवी वर्मा की 'स्मृति की रेखाएं' को इसी वजन पर 'संस्मरणात्मक रेखाचित्र' कहने का प्रचलन है। डॉ. मनोरमा शर्मा लिखती है, 'न कोई संस्मरण रचना बिना रेखाचित्र के पूरी हो सकती है और न कोई रेखाचित्र बिना संस्मरण कै। यही कारण है कि कुछ रेखाचित्र संस्मरणात्मकता का आभास देते हैं, तो संस्मरण रेखाचित्र के समीप है। महादेवी वर्मा की रचनाएं इसका प्रमाण है। पंत के 'साठ वर्ष' के बारे में भी यही राय है।' लेकिन संस्मरण का क्षेत्र रेखाचित्र से व्यापक है। संस्मरण में सिर्फ कोई व्यक्ति ही लेखन के केन्द्र में नहीं होता, बल्कि उसके बहाने उस युग–जीवन को भी अनायास ही चित्रित कर दिया जाता है।

इसलिए संस्मरण पर बात करने से पूर्व संस्मरण और रेखाचित्र में अंतर समझ लेना, फायदेमंद होगा। रामचंद्र तिवारी लिखते हैं – ''संस्मरण और रेखाचित्र एक दूसरे से मिलती–जुलती गद्य विधाएं हैं। इनका विकास आधुनिक हिंदी गद्य की विशेषता है। संस्मरण किसी स्मर्यमान (स्मरण किये जा रहे) की स्मृति का शब्दांकन है। जिसका स्मरण किया जा रहा है, उसके जीवन के वे पहलू, वे संदर्भ और वे चारित्रिक विशेषताएँ, जो स्मरणकर्ता को याद रह जाते हैं, उन्हें वह अंकित करता है। स्मरण वही रह जाता है जो महत्, विशिष्ट, विचित्र और प्रिय है। स्मर्यमान को अंकित करते हुए लेखक स्वयं भी अंकित होता चलता है। संस्मरण में विषय और विषयि दोनों ही रूपायित होते हैं। इसलिये इसमें संस्मरणकर्ता

पूर्णतः तटस्थ नहीं रह पाता। वह अपने स्व का पुनः सृजन करता है।''

संस्मरण की परिभाषा के बाद रेखाचित्र की परिभाषा पर दृष्टि डाली जा सकती है। रेखाचित्र किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना या भाव का कम से कम शब्दों में मर्मस्पर्शी, भावपूर्ण और सजीव अंकन है। अंग्रेजी में जिसे 'स्कैच' कहा जाता है, उसके लिए हिंदी में 'रेखाचित्र', 'व्यक्तिचित्र', 'शब्दचित्र' शब्दों का प्रयोग होता है। रेखाचित्र में तटस्थता, संक्षिप्तता और तीखापन अधिक होता है। ये ही विशेषताएँ ही उसे अन्य साहित्य रूपों से अलग करती हैं। रेखाचित्र की विशेषता विस्तार में नहीं तीव्रता में होती है। रेखाचित्र पूर्ण चित्र नहीं है, वह व्यक्ति, वस्तु, घटना आदि का एक निश्चित दृष्टि से बिंदु से किया गया प्रतिबिंबन है, जिसमें विवरण कम रहता है, लेकिन तीव्र संवेदना रहती है।

रामचंद्र तिवारी आगे लिखते हैं, 'रेखाचित्र में भी किसी व्यक्ति, वस्तु या संदर्भ का अंकन किया जाता है। यह अंकन पूर्णतः तटस्थ भाव से और निर्लिप्त रहकर किया जाता है। रेखाचित्र में रेखाएं बोलती हैं। जिस प्रकार कुछ थोड़ी सी रेखाओं का प्रयोग करके रेखाचित्रकार किसी व्यक्ति या वस्तु की मूलभूत विशेषता को उभार देता है, उसी प्रकार कुछ थोड़े से शब्दों का प्रयोग करके साहित्यकार किसी व्यक्ति या वस्तु को उसी मूलभूत विशेषता के साथ सजीव कर देता है। रेखांकन करते समय वह अपने को तटस्थ रखने की चेष्टा करता है। वस्तु को ही महत्व देता है। जब कभी तटस्थता भंग होती है तो रंगों की चटक में रेखाएं डूब जाती हैं।७

संस्मरण और रेखाचित्र के अंतर को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है :

1. रेखाचित्र उपेक्षित, परिचित और साधारण व्यक्ति के असाधारण व्यक्तित्व पर आधारित होते हैं। जबकि संस्मरण बहुधा परिचित और असाधारण व्यक्ति के असाधारण व्यक्तित्व पर आधारित होते हैं।
2. रेखाचित्र संवेदनात्मक दृष्टि को लेकर लिखा जाता है, लेकिन संस्मरण अक्सर श्रद्धात्मक दृष्टि को लेकर लिखा जाता है।
3. रेखाचित्र समाज के उपेक्षित व्यक्तियों के प्रति करूणा उत्पन्न करने के लिए लिखा जाता है, जबकि संस्मरण समाज में ऊंचा कद रखने वाले व्यक्ति के लिए श्रद्धा जगाने के लिए लिखा जाता है।

संस्मरण तथा जीवनी

संस्मरण और जीवनी के बीच समानता कई बिंदुओं पर पायी जाती है। हम कह सकते हैं कि संस्मरण जीवनी के लिए दुर्लभ सामग्री जुटाने वाली साहित्यिक विधा है। दोनों विधाएं ही व्यक्ति–प्रधन है, परन्तु स्वरूप की दृष्टि से दोनों में अंतर है। संस्मरण मानव जीवन को समग्रता में प्रतिबिंबित नहीं करता जबकि जीवनीकार उसके सारे विस्तार को समेटता है। वैसे तो संस्मरण एक दृष्टि में जीवनी का ही संक्षिप्त रूप लग सकता है, लेकिन दोनों में अंतर स्पष्ट है। यह अंतर रचना प्रक्रिया के स्तर पर भी है और वस्तु और शैली के स्तर पर भी। पहला और महत्वपूर्ण अंतर तो यही है कि संस्मरण उन व्यक्तियों पर ही लिखा जाता है, जिनसे लेखक न सिर्फ मिल चुका होता है, बल्कि उनसे निकट का संपर्क भी होता है। जबकि जीवनी लेखन के लिए ऐसा कतई जरूरी नहीं है। दुनिया की ऐसी अनेको श्रेष्ठ जीवनियाँ ऐसे व्यक्तियों पर लिखी गई है, जिनसे लेखक न पहले मिला था, न ही जीवनी लिखते वक्त वे जीवित ही थे। ऐसी जीवनियाँ आज भी लिखी जा रही हैं। हिंदी में विष्णु प्रभाकर द्वारा बांग्ला उपन्यासकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय की जीवनी 'आवारा मसीहा' इसका जीता–जागता उदाहरण कहा जा सकता है। जीवनी को पुस्तकों, संस्मरणों, पत्रों, लेखों, उपलब्ध विवरणों, वंशजों और चरित नायक के परिचित व्यक्तियों से उपलब्ध सामग्री और उनके कथनों के आधार पर लिखा जाता है। इसी प्रकार जीवनी लेखन एक शोधपरक काम है। जबकि संस्मरण हमेशा वैसे चरित्रों का लिखा जाता है, जिनसे लेखक मिला हो, बातचीत की हो और उससे, उसका घनिष्ठ संबंध रहा हो। यही कारण है कि संस्मरणों में तारीख या समय पर ध्यान नहीं दिया जाता, जबकि जीवनी लिखते समय इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती।

इस तरह देखें, तो जीवनी में वस्तुपरकता, संस्मरण की तुलना में ज्यादा होती है। साथ ही जीवनी लेखक, ज्यादा निरपेक्ष भाव से किसी चरित्र के बारे में लिखता है। इसमें शोधपूर्वक जमा किये गये ब्यौरों का महत्व कहीं ज्यादा होता है। तटस्थता जीवनी लेखन की पहली शर्त है। जबकि संस्मरण का लेखक तटस्थता का दावा नहीं करता। जीवनी लेखक, जीवनी में गायब रहता है। उसका 'मैं' जीवनी पर हावी नहीं होता। जबकि संस्मरण में केन्द्र में 'मैं' होता है। क्योंकि इसमें किसी व्यक्ति के उन क्षणों को याद किया जाता है, जिसमें मैं की भूमिका होती है। जीवनी में किसी व्यक्ति के जीवन की पूरी और क्रमवार कथा होती है, उसकी अच्छाई–बुराई सबका अंकन होता है। जबकि संस्मरण में ऐसे किसी क्रम की परवाह नहीं की जाती। यह किसी व्यक्ति के जीवन से जुड़े कुछ रोचक प्रसंगों तक ही सीमित रहता है। साथ ही इसमें तटस्थता का भी दावा नहीं होता। लेखक अपनी मर्जी से किसी व्यक्ति के जीवन के चित्रों को चुनता है। 'पथ के साथी' के 'दो शब्द' में महादेवी वर्मा ने लिखा है, ''अपने अंग्रेजों सहयोगियों के सम्बन्ध में, अपने–आप को दूर रखकर कुछ कहना सहज नहीं होता। मैंने साहस तो कियया है पर ऐसे स्मरण के लिए आवश्यक निर्लिप्तता या असंगतता मेरे लिए संभव नहीं है। मेरी दृष्टि के सीमित शीशे में वे जैसे दिखाई देते हैं, उससे वे बहुत उज्जवल और विशाल है, इसे मानकर पढ़ने वाले ही उनकी कुछ झलक पा सकेंगे।'' इससे यह स्पष्ट होता है कि इतिहास जैसी तटस्थता संस्मरण में मुमकिन नहीं है।

संस्मरण तथा आत्मकथा

एक तरह से देखें, तो संस्मरण और आत्मकथा, दोनों ही जीवन में पीछे की ओर मुड़कर देखने वाली विधाएं हैं। आत्मनिष्ठता और स्मृति तत्व दोनों ही प्रमुख होता है। लेकिन इतने से ही दोनों समान नहीं हो जातीं। संस्मरण में लेखक अपनी निगाहों से किसी और के जीवन को देखता है। इस देखने में है, उसका अपना जीवन भी चला जाता है। जबकि आत्मकथा में वह अपनी निगाहों से खुद को देखता है। आत्मकथा में पूर्णता होती है। यह पूरे

जीवन का लेखा–जोखा होता है, जबकि संस्मरण के लिए पूर्णता कोई शर्त नहीं है।

संस्मरण किसी के जीवन के किसी दौर या वक्फे को पकड़ता है। संस्मरण में लेखक की दृष्टि चयनात्मक होता है। वही उन्हीं क्षणों को याद करता है, जिसे वह याद करना चाहता है। लेकिन आत्मकथा में लेखक को अपने पूरे जीवन को क्रमवार रूप से प्रकट करना होता है। संस्मरण, अपनी आत्मकथा का कच्चा माल है और किसी की जीवनी के लिए स्त्रोत सामग्री है। अरूण प्रकाश के मुताबिक 'संस्मरण भी आत्मकथा ही है, अलबत्ता वह समग्र आत्मकथा के मुकाबले छोटा होता है। संस्मरण में अतीत के खास क्षणों, मोड़ों को फिर से जीवित करने की कोशिश होती है।८

संस्मरण का इतिहास

प्रायः प्रत्येक नये विधा अपने आगमन की घोषणा पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से ही करती है। संस्मरण साहित्य भी इसका अपवाद नहीं है। हिंदी संस्मरण साहित्य का प्रारंभिक स्वरूप 'सरस्वती', 'माधुरी', 'सुधा', 'विशाल भारत', 'हंस' जैसी पत्रिकाओं से उपलब्ध होता है। हालांकि डॉ. मनोरमा शर्मा भारतेंदु युग से ही संस्मरण का प्रारंभ मानती है। कुछ विद्वान बालमुकुंद गुप्त द्वारा सन् 1907 में प्रतापनारायण मिश्र पर लिखे संस्मरण को हिंदी का प्रथम संस्मरण मानते हैं। लेकिन वास्तविकता यह है कि संस्मरण साहित्य की शुरूआत द्विवेदी युग से पहले नहीं हुई। असल और कलात्मक संस्मरण द्विवेदी युग के बाद ही दिखते हैं। यहाँ हम द्विवेदी युग से औपचारिक रूप से शुरू होने वाली संस्मरण विधा के संक्षिप्त इतिहास पर एक नजर डाल सकते हैं।

द्विवेदी युग

इसमें दोराय नहीं कि संस्मरण विधा का आरंभ द्विवेदी युग से पहले नहीं हुआ। 'सरस्वती' इस युग की सर्वाधिक महत्वपूर्ण पत्रिका थी और संस्मरण साहित्य ने इसके माध्यम से ही अपने आगमन की सूचना दी। इसके विभिन्न अंकों में स्वयं महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'अनुमोदन का अंत' (फरवरी, 1905), सभा की सळयता (अप्रैल, 1907), 'विज्ञानाचार्य बसु का विज्ञान मंदिर' (जनवरी, 1918) आदि की रचना करके संस्रण साहित्य की श्रीवृद्धि की। सरस्वती के अंकों में महावीर प्रसाद द्विवेदी के अतिरिक्त रामकुमार खेमका, जगद्विहारी सेठ, पांडुरंग खानखोजे, प्यारेलाल मिश्र, काशीप्रसाद जायसवाल, जगन्नाथ खन्ना, भोलादत्त पांडेय आदि द्वारा लिखे संस्मरण भी प्रकाशित हुए। आलोच्य युग में प्रकाशित अधिकांश संस्मरण प्रवासी भारतीयों द्वारा लिखे गये और प्रायः सभी का अभीष्ट भारतीय पाठकों को पश्चिम की रीति–नीतियों और दर्शनीय स्थलों आदि से परिचित करना था। यही कारण है कि इनकी शैली अनेक स्थलों पर निबंधात्मक हो गयी है। पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित संस्मरण साहित्य की दृष्टि से 'हरिऔध जी के संस्मरण' ही इस युग की उल्लेखनीय कृति है। इसके लेखक बालमुकुंद गुप्त हैं।

छायावाद युग

आलोच्य युग में संस्मरणों तथा रेखाचित्रों की पर्याप्त परिमाण में रचना की गयी। संस्मरण तो इस युग के पूर्व भी लिखे गये थे, किन्तु रेखाचित्रों की रचना इसी काल में हुई। जहां तक संस्मरणों का संबंध है, पूर्ववर्ती युग के समान इस युग में भी पत्र–पत्रिकाओं ने ही इसकी श्रीवृद्धि में सर्वाधिक योगदान दिया। सरस्वती में रामकुमार खेमका, कृपानाथ मश्र, रामनारायण मिश्र, भगवानदीन दुबे, रामेश्वरी नेहरू, श्री मन्नारायण अग्रवाल आदि के अनेक यात्रावृत्तांतमूलक संस्मरण प्रकाशित हुए, जिनसे देश–विदेश के जीवन के विविध पक्षों, दर्शनीय स्थानों, प्राकृतिक सौंदर्य आदि का वर्णन विवरणपरक भावनात्मक शैली में रोचक ढंग से किया गया। 'विशाल भारत', 'सुधा' और 'माधुरी' में भी कई उल्लेखनीय संस्मरण प्रकाशित हुए। आचार्य रामदेव, अमृतलाल चक्रवर्ती, बनारसीदास चतुर्वेदी, मंगलदेव शर्मा जैसे लेखकों ने इन पत्रिकाआं के लिए क्रमशः स्वामी श्रद्धानंद, बालमुकुंद गुप्त, श्रीधर पाठक और पद्मसिंह शर्मा से संबंद्ध जीवनीपरक संस्मरणों की रचना की। 'सुधा' (1921) में प्रकाशित इलाचंद्र जोशी कृत 'मेरे प्राथमिक जीवन की स्मृतिं' तथा वृंदावनलाल वर्मा कृत 'कुछ संस्मरण' भी उल्लेखनीय रचनाएं हैं। पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री के अतिरिक्त इस अवधि में संस्मरणों के कतिपय संकलन भी प्रकाशित हुए, जिनमें शिवराम पांडेय, श्रीराम शर्मा, मन्थमनाथ गुप्त तथा शिवनारायण टंडन द्वारा क्रमशः रचित मदनमोहन के संबंध की 'कुछ पुरानी स्मृतियां' (1932), 'शिकार' (1936), 'क्रांति–युग के संस्मरण' (1937) और 'झलक' (1938) उल्लेखनीय है। इनमें से अंतिम कृति में हरिऔध जी के जीवन की कुछ स्मृतियां दी गयी है। हिंदी संस्मरण–परंपरा के प्रारंभिक उन्नायकों में पद्मसिंह शर्मा, राधिकारमण सिंह तथा श्रीराम शर्मा का नाम महत्वपूर्ण है। पद्मसिंह शर्मा संस्मरण परंपरा के जनक माने जाते हैं। इनके संस्मरण 'पद्म पराग' (1929) में संकलित है। राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह के संस्मरण 'सावनी समां', 'वे और हम', 'तब और अब', 'टूटा तारा' आदि संग्रहों में संकलित है। श्रीराम शर्मा के संस्मरण 'शिकार', 'बोलती प्रतिमा', तथा 'सन बयालीस के संस्मरण' आदि रचनाओं में मिलते हैं। 'बोलती प्रतिमा' में संकलित संस्मरणों को रेखाचित्र के करीब माना जा सकता है। बाबूराव विष्णुराव पड़ारकर द्वारा संपादित 'हंस' का प्रेमचंद स्मृति अंक (1937) तथा ज्योतिलाल भार्गव द्वारा संपादित साहित्यिकों के संस्मरण भी इसी युग की उल्लेखनीय रचनाएं हैं। शिवरानी प्रेमचंद का 'प्रेमचंद घर में' (1944) का महत्व भी संस्मरण की दुनिया में निर्विवाद है। महादेवी वर्मा के संस्मरणात्मक रेखाचित्रों का प्रकाशन भी इसी काल में शुरू हो चुका था। 'समग्रतः आलोच्य युग में संस्मरणों और रेखाचित्रों में कथ्य और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से पर्याप्त वैविध्य दृष्टिगत होता है। कथ्य की दृष्टि से संस्मरण साहित्य में जहां समाजसेवी नेताओं, साहित्यकारों तथा प्रवासी भारतीयों के स्मृति प्रसंगों को रोचक एवं प्रवाहपूर्ण शैली में प्रस्तुत करके पाठक को कर्मक्षेत्र में अग्रसर होने की प्रेरणा दी गयी है, वहीं रेखाचित्रों में समाज के उपेक्षित व्यक्तियों के चित्रण पर बल दिया गया है।६

छायावादोत्तर युग

संस्मरण विधा के प्रतिष्ठापकों में पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी तथा रामवृक्ष बेनीपुरी के नाम

अग्रगण्य हैं। पंडित बनारसी दास चतुर्वेदी की दो संस्मरण कृतियां हैं – 'हमारे आराध्य' तथा 'संस्मरण'। रामवृक्ष बेनीपुरी की विशेष ख्याति उनके संस्मरणों के कारण भी है। 'माटी की मूरतें', 'मील के पत्थर', 'जंजीरें और दीवारें' आदि रचनाओं में इन्होंने स्वानुभूतियों को अंकित किया है।

महादेवी वर्मा के संस्मरण रेखाचित्र और संस्मरण का मिला–जुला रूप है। 'स्मृति की रेखाएं' और 'अतीत के चलचित्र' उनके संस्मरणात्मक रेखाचित्र हैं। पथ के साथी में उन्होंने कुछ प्रमुख समकालीन साहित्यिक हस्तियों के संस्मरण लिखे हैं। पथ के साथी में रवीन्द्रनाथ ठाकुर, मैथलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत, सुभद्राकुमारी चौहान तथा सियाराम शरण गुप्त के उत्कृष्ट शब्द–चित्र हैं। राहुल सांस्कृत्यायन के जीवनीपरक साहित्य की भी इस विधा में अनुपम देन है। 'बचपन की स्मृतियाँ', 'मेरे असहयोग के साथ' तथा 'जिनका मैं कृतज्ञ' उनके तीन संस्मरण संग्रह हैं। उनके संस्मरणों में पर्याप्त वैविध्य दिखाई पड़ता है। राहुल सांकृत्यायन की भांति भदन्त आनंद कौसाल्यायन ने विविधोन्मुखी संस्मरण लिखे हैं। 'जो न भूल सका', 'जो लिखना पड़ा', 'रेल टिकट', 'देश की मिट्टी बुलाती है', 'एक गाँव अनेक युग' आदि रचनाओं में उनके संस्मरण संकलित हैं। 'साहित्यिक जीवन के अनुभव और संस्मरण रचना में किशोरीदास वाजपेयी के संस्मरण प्राप्त होते हैं। आचार्य चतुरसेन शास्त्री के 'वातायन' में रेखाचित्र एवं संस्मरण संकलित हैं।

काका कालेलकर (संस्मरण यात्रा), गुलाब राय (मेरी असफलताएँ), विनोदशंकर व्यास (प्रसाद और उनके समकालीन), माखनलाल चतुर्वेदी (समय के पाँव), शांतिप्रिय द्विवेदी (पथ चिह्न 1946), स्मृतियाँ और कृतियाँ, जैनेंद्र (गांधी कुछ स्मृतियाद्द, ये और वे), जानकी वल्लभ शास्त्री (स्मृति के वातायन), शिवपूज सहाय (वे दिन वे लोग), प्रकाशचंद्र गुप्त (मिट्टी के पुतले), रामनरेश त्रिपाठी (तीस दिन : मालवीय जी के साथ) आदि इस युग के प्रमुख संस्मरणकार कहे जा सकते हैं।

देवेन्द्र सत्यार्थी, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर (जिंदगी मुस्कराई), उपेन्द्रनाथ अश्क (मंटो मेरा दुश्मन, ज्यादा अपनी, कम परायी), डॉ. नगेन्द्र (चेना के बिंब), जगदीश चंद्र माथुर (दस तस्वीरें, जिन्होंने जीना जाना), रामधारी सिंह दिनकर (लोकदेव नेहरू), हरिवंशराय बच्चन (नये–पुराने झरोखे), अमृतलाल नागर (जिनके साथ जिया), कृष्णा सोबती (हम हशमत), भारतभूषण अग्रवाल (लीक–अलीक), डॉ. रामकुमार वर्मा (संस्मरणों के सुमत), विष्णु प्रभाकर (मेरे अग्रज : मेरे मीत), फणीश्वरनाथ रेणु (वन तुलसी की गंध) आदि इस युग में संस्मरण या संस्मरणात्मक रेखाचित्र में योगदान देने वाले प्रमुख साहित्यिकार हैं। अरूण प्रकाश कहते हैं, 'इन संस्मरणों को खंगालने से साफ हो जाता है कि संस्मरण के केन्द्र में 'विशिष्ट' ही रहे, चाहे वे लेखक हों या राजनेता। तीन ऐसी पुस्तकें हैं, जो मामूली लोगों के बारे में है। कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, श्रीराम शर्मा और रामवृक्ष बेनीपुरी ने आम लोगों के बारे में लिखा है और संयोग से ये तीनों पत्रकार थे। ये आम लोगों का महत्व समझ रहे थे, जबकि शुद्ध साहित्यिक संस्मरण लेखक विशिष्टों को संस्मरण के योग्य मान रहे थे।१०

उत्तरवर्ती युग

बाद के समय में संस्मरण के क्षेत्र में कई कृतियाँ काफी लोकप्रिय और चर्चित रहीं। इनमें अज्ञेय का 'स्मृतिलेखा', हरिशंकर परसाई का 'तिरछी रेखाएं', राजेन्द्र यादव का 'मुड़–मुड़ के देखता हूँ', 'वे देवता नहीं हैं', 'औरों के बहाने', कमलेश्वर का बारह भारतीय रचनाओं के जीवन के बेहद निजी शब्द चित्र 'मेरा हमदम, मेरा दोस्त', मन्नू भंडारी का 'एक कहानी यह भी', मनोहर श्याम जोशी का 'लखनऊ मेरा लखनऊ', काशीनाथ सिंह के संस्मरण 'याद हो कि न याद हो', 'आछे दिन पाछे गए', 'घर का जोगी जोगड़ा', जिसमें उन्होंने अपने बड़े भाई और वरिष्ठ आलोचक नामवर सिंह के जीवन संघर्षों का स्मरण किया है, नरेन्द्र कोहली का 'स्मरामि', रामशरण जोशी का 'प्रतिबिंबन : व्यक्ति, विचार और समाज', ममता कालिया का 'कितनी शहरों में कितनी बार', हाल ही में प्रकाशित 'कल परसों के बरसों', रविन्द्र कालिया का 'गालिब छूटी शराब', 'सृजन के सहयात्री', 'कामरेड मोनालिसा', दूधनाथ सिंह का 'लौटा आओ धार', विश्वनाथ त्रिपाठी का 'गंगा स्नान करने चलोगे क्या', 'नंगा तलाई का गांव', जिसे स्मृति आख्यान कहा गया है, स्वयंप्रकाश का 'हमसफरनामा', नीलाभ का 'ज्ञानरंजन के बहाने', ज्ञानरंजन का 'तारामंडल के नीचे एक आवारा गर्द' और अन्य संस्मरण, शिवमूर्ति का 'सृजन का रसायन', कांतिकुमार जैन का 'लौट कर आना नहीं होगा', 'जो कहूंगा, सच कहूंगा' अजित कुमार का 'निकट मन में', अमृत राय का 'जिनकी याद हमेशा रहेगी', विष्णुकांत शास्त्री का 'सुधिया उस चंदन के वन की', गिरिराज किशोर का 'सप्तवर्णी', देवेन्द्र सत्यार्थी का 'यादों के काफिले', रामरदश मिश्र का 'अपने–अपने रास्ते', चन्द्रकान्ता का 'मेरे भोजपत्र' आदि अनेकानेक संस्मरण इस बात के प्रमाण हैं कि सस्मरण की विधा वर्तमान समय में न सिर्फ आगे बढ़ रही है, बल्कि बाकी साहित्यिक विधाओं को लोकप्रियता के मामले में अच्छी खासी चुनौती भी दे रही है।

सबसे बड़ी बात यह है कि संस्मरण–साहित्य ने लगातार अपना फॉर्म तोड़ा और अपनी सीमाओं का विस्तार किया है। विगत दो दशकों में श्रद्धामूलक भाव से मुक्ति की कोशिशों ने इसे विवादप्रिय और लोकप्रिय दोनों बनाया है। अरूण प्रकाश ने इन लेखकों के संस्मरण के बारे में एक महत्वपूर्ण बात की ओर ध्यान दिलाया है। यह पूर्ववर्ती संस्मरणों से साठ–सत्तर के दशक के बाद के संस्मरणों के एक महत्वपूर्ण अंतर को बताता है। वे कहते हैं, ''अज्ञेय, कमलेश्वर, काशीनाथ सिंह, राजेन्द्र यादव कांतिकुमार जैन साहसी संस्मरण लेखकों में गिने जायेंगे। इन सबने जीवित विशिष्ट जनों पर लिखा है। खण्डन–मंडन, प्रतिशोध और वैर झेला और झमेले से बच निकलने की कलाबाजी नहीं दिखायी। ११

निष्कर्ष

आजादी के बाद के हिंदी साहित्य के परिदृश्य में जिन विधाओं ने लगातार अपने लिए स्थान बनाया है,

उनमें संस्मरण संभवतः सबसे उल्लेखनीय है। यही वजह है कि कई बार आलोचकों को इस बात पर हैरत प्रकट करते हुए भी देखा जा सकता है कि आखिर इस विधा के विस्फोट के पीछे कौनसी शक्तियाँ काम कर रही है कारण जो भी हो, यह निस्संदेह कहा जा सकता है कि संस्मरण ने हिंदी–साहित्य को समृद्ध करने की दिशा में महत्वपूर्ण काम किया है और खुद भी हाशिये से उठकर साहित्य के केन्द्र में स्थापित हो चुका है। हालांकि संस्मरणों ने कई बार विवादों को भी जन्म दिया है, लेकिन साहित्य–समय की धड़कनों को पकड़ने में यह विधा कामयाब हुई है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *संपादन, डॉ. नगेन्द्र सिंह, ''मानविकी पारिभाषिक कोश''पृ.सं. १६७*
2. *अरूण प्रकाश, ''गद्य की पहचान'' पृ.सं. १५४*
3. *डॉ. राजमणि शर्मा, ''साहित्य के रूप'' पृ.सं. २०४*
4. *डॉ. हरिमोहन, ''साहित्य विधाएँ : पुनर्विचार'', पृ.सं. २३६*
5. *डॉ. मनोरमा शर्मा, ''संस्मरण और संस्मरणकार'' पृ.सं. ६८*
6. *डॉ. हरिमोहन, ''साहित्य विधाएँ : पुनर्विचार'', पृ.सं. २४२–४३*
7. *रामचंद्र तिवारी, ''हिंदी का गद्य साहित्य'' पृ.सं. २६७*
8. *अरूण प्रकाश, ''गद्य की पहचान'' पृ.सं. १८२*
9. *डॉ. नगेन्द्र, ''हिंदी साहित्य का इतिहास'' पृ.सं. ५२२,५२३, ५६७*
10. *रवेल चन्द्र आनंद ''आधुनिक हिन्दी गद्य'' १४०*
11. *अरूण प्रकाशन, ''गद्य की पहचान'' पृ.सं. १५६, १६१*